दयानिता सिंह: **झूठी तस्वीरें**

पूजा वैश द्वारा क्यूरेटेड

‘*फ़ोटोग्राफ़ी सच का नक़ाब ओढ़े एक अफ़साना होती है*’ – दयानिता सिंह

दयानिता सिंह हमें याद दिलाती हैं कि सभी तस्वीरें, चाहे वो काल्पनिक हों या डॉक्यूमेंटरी, तस्वीर बनाने वाले के नज़रिए से ही अपना अर्थ ग्रहण करती हैं। इस प्रदर्शनी के ज़रिए सिंह वास्तविकता के साथ फ़ोटोग्राफ़ी के धुंधले रिश्ते पर अपने दशकों से चले आ रहे चिंतन का सार सामने रखती हैं। फ़ोटोग्राफ़ी की उनकी पड़ताल इस माध्यम की ताक़त को सामने रखती है, चाहे वो हक़ीक़त को दर्ज करने की ताक़त हो या भ्रम पैदा करने की। इसकी बुनियादी अस्पष्टता को वे एक उत्तेजक कलात्मक भाषा में बदल देती हैं। ‘झूठी तस्वीरों’ में उनके आर्काइव से निकाली गई अलग-अलग तरह के स्थापत्य और जगहों की तस्वीरें एनालॉग मोंताज, मल्टीप्लिसिटी, मास्किंग, फ्रेमिंग और आकार के खेल से एक नए व गहरे अफ़साने की शक्ल ले लेती हैं।

सिंह का रचनाकर्म देखने के विविध तरीक़े सामने रखता है जिसमें किसी एक तस्वीर या अर्थ की विशिष्टता की बजाय एक आर्काइव यानी तस्वीरों व अर्थों की श्रृंखला पर ज़ोर है। कहानियों, विचारों व इतिहासों के विविध विन्यासों के संग्रह के रूप में यह संग्रहालय में एक ख़ास जगह रखता है।

अपने मोंताजों में सिंह ऐसी जादुई जगहों का निर्माण करती हैं जहाँ अलग-अलग तरह के स्थापत्य एक अनपेक्षित तारतम्य में मिलते हैं। समय व भूगोल की धुंधली सीमाओं के बीच वास्तविकता और गल्प, स्मृति और कल्पना के बीच नाज़ुक-से तनाव उभरते हैं। उनके मोंताज एक ही आकार की तस्वीरों को हाथ से काट व चिपकाकर बनाए गए हैं।

पूरी प्रदर्शनी में सिंह की शुरुआती कलाकृतियाँ अलग-अलग रूपों में सामने आती हैं। उनकी कलाकृति *म्यूज़ियम्स* ख़ाली खोलों की तरह खुलते हैं जो लोगों के लिए प्रदर्शनी में आवाजाही की जगहों और दृष्टिकोणों को परिवर्तित कर देते हैं। जहाँ *फ़ाइल म्यूज़ियम* को एक ख़ाली संरचना की तरह दिखाया गया है, उनमें जो तस्वीरें हुआ करती थीं वे अब मोंताजों की शक्ल में *मोना इन द आर्काइव* में दिखती हैं, और फिर *पेंटेड फ़ोटोज़* में छिपी हुई दिखती हैं। अपने इस जारी आर्काइव को नए सिरे से प्रस्तुत करके सिंह अपने रचनाकर्म की परतदार कार्यशैली को सामने रखती हैं जहाँ अर्थों के मायने लगातार बदलते हुए तमाशे के दृश्यों की तरह खुलते हैं।

‘झूठी तस्वीरों’ का प्रदर्शन सीएसएमवीएस संग्रहालय की वस्त्र व प्राकृतिक इतिहास गैलेरियों में भी किया गया है।